आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425
डाक पंजीकरण संख्या : RTK/10/2014-16

सृष्टि संवत् 1960853116
विक्रम संवत् 2072
दयानन्दाब्द 192

सेवा में,

महर्षि दयानन्द सरस्वती

E-mail : aryapsharyana@gmail.com
Website : www.apsharyana.org

ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र दूरभाष : 01262-216222, Mob. 8901387993
विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर सम्पादक : मा० रामपाल आर्य

वर्ष : 12 अंक : 18 रोहतक, 7 अक्तूबर, 2015 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

हमारा अभिवादन नमस्ते ही क्यों?

❑ गंगाशरण आर्य 'साहित्य सुमन'

वैदिक काल से वेदों के अन्दर भी 'नमस्ते' शब्द का प्रयोग है। उसके बाद ऋषियों के ग्रन्थों में भी 'नमस्ते' का ही प्रयोग है और सम्पूर्ण संस्कृत वाङ्मय में भी 'नमस्ते' का ही प्रयोग है और अब भी मनुष्य-मनुष्य के बीच में परस्पर अभिवादन करने के लिए 'नमस्ते' शब्द बहुतायत रूप में प्रचलित है। आदि सृष्टि से लेकर महाभारत पर्यन्त सब मनुष्य परस्पर 'नमस्ते' ही करते थे। महाभारत काल के उपरान्त भारत के पतनकाल में अनेक मत-मतान्तर फैले परिणाम स्वरूप भारतीय संस्कृति व संस्कारों में परिवर्तन प्रारम्भ हो गया। जो लोग अनपढ़ थे, उन्होंने तो मत-मतान्तरों द्वारा फैलाई गई भ्रान्तियां चाहे किसी भी विषय में हो को ज्यों का त्यों स्वीकारा ही, लेकिन पढ़े-लिखे व्यक्तियों ने भी इन भ्रान्तियों को बिना किसी विरोध के अपनी संस्कृति मानकर स्वीकार कर लिया। यही हमारी संस्कृति के बिखर जाने का बड़ा कारण बना।

सनातन काल से ही 'नमस्ते' प्रचलित रहा न कि 'नमस्कार'। व्याकरण की दृष्टि से 'नमस्ते' शब्द नमः+ते से मिलकर बना है। 'नमः' की जो विसर्गें (:) हैं, सन्धि में विसर्गों को आधा 'स्' हो जाता है। इसलिए 'नमस्ते' उच्चारित होता है। नमस्ते में जो 'ते' शब्द है वह युष्मद् शब्द का चतुर्थी विभक्ति के एकवचन में तुभ्यम् के स्थान पर विकल्प रूप में प्रयोग होता है। जिसका अर्थ होता है आपके लिए या तुम्हारे लिए नमः का अर्थ सम्मान करता हूँ ऐसा है। नमस्कार के प्रयोग में अहंकार ही तो शेष रहता है झुकता नहीं। ऋषि मुनियों ने कभी भी नमस्कार शब्द का प्रयोग नहीं किया क्योंकि ये संज्ञा है न कि वाक्य, जबकि नमस्ते अपने आप में शब्द होते हुए भी एक पूरा वाक्य है जिसका अर्थ है मैं आपका सम्मान करता हूँ। क्योंकि चतुर्थी विभक्ति के साथ नमः का प्रयोग किया जाता है। जैसे—गुरुवे नमः, शिवाय नमः, रामाय नमः आदि। लेकिन परमात्मा के केवल मुख्य और निज नाम 'ओ३म्' के साथ चतुर्थी विभक्ति नहीं लगती इसलिए 'ओ३म् नमः' उच्चारण किया जाता है, ओमाय नमः नहीं।

रही बात हाथ जोड़कर नमस्ते करने की तो यह अपना भाव स्पष्ट करने की बाह्य प्रक्रिया है। लोक व्यवहार में बुद्धि से, हृदय से एवं शरीर द्वारा कर्म करके नमस्ते की प्रक्रिया को पूर्ण किया जाता है। आजकल तो भारतीय बच्चों पर पाश्चात्य शैली का प्रभाव बढ़ता जा रहा है। हाय, हैलो की संस्कृति घर करती जा रही है। अभिवादन शब्द के सही अर्थ को न समझकर अनभिज्ञ लोगों ने अर्थ का अनर्थ कर दिया है और अभिवादन को व्यक्त करने वाला 'नमस्ते' शब्द आंशिक रूप से दब गया है। इसके स्थान पर अभिवादन की दूषित परिपाटियों की बाढ़ों ने अपना प्रभाव जमा लिया। अभिवादन में हाथ से हाथ मिलाकर हैलो या हाय कहना भी इन्हीं दूषित प्रणालियों में से एक है। हाय, यह शब्द सुनते ही तो ऐसा लगता है मानो किसी के मरने की खबर सुन ली हो और हेलो शब्द तो केवल टेलीफोन आविष्कारक की पत्नी का नाम है उसका कोई अर्थ तो निकलता नहीं। इसके अतिरिक्त परस्पर हाथ मिलाने की प्रक्रिया में समय भी अधिक व्यय होता है एवं संक्रामक रोग भी प्रसारित हो सकता है। इंग्लैण्ड से प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'न्यू इंग्लैण्ड जनरल ऑफ मेडिसिन' में अनुभवी डॉक्टरों ने लोगों को अपनी राय देते हुए कहा है कि 'सौ में से चालीस लोगों को जुकाम के कीटाणु हाथ मिलाने से ही पकड़ लेते हैं। इसलिए सदैव हाथ जोड़कर नमस्ते ही करें हाथ मिलाने वालों से सावधान रहें। वैसे भी हाथ जोड़कर 'नमस्ते' किये जाने वाले अभिवादन में जो आत्मीयता झलकती है वह अन्य में नहीं। पंडित अयोध्या प्रसाद जी वैदिक मिशनरी के शब्दों में इसकी व्याख्या इस प्रकार है—With all the knowledge of my mind, with all the strength of my arms, with all the love of my heart, I bow to the soul unto you, अर्थात् मेरे मस्तिष्क में जितना ज्ञान है, हाथों में जितनी शक्ति है और हृदय में जितना प्रेम है, उस सब के साथ में आपकी आत्मा के प्रति नमन करता हूँ। हार्दिक, वैदिक एवं वैज्ञानिक अभिवादन नमस्ते करने में जहां व्यक्ति छुआछूत के विभिन्न रोगों से बचता है वहां इसके साथ किसी अज्ञात व्यक्ति से मिलते समय अधिक सुरक्षित भी रहता है।

परमपिता परमात्मा को भी नमस्कार तो किया जाता है लेकिन हमारी आंखें उस समय बन्द होती हैं, परमेश्वर का ध्यान करने के लिए, जो कि हाथ जोड़ने की बजाय ज्ञान मुद्रा में या अंजलि मुद्रा में बैठकर आसानी से किया जा सकता है। लेकिन आज हमारे देश में पढ़े-लिखे स्नातक हो या अनपढ़ या वेदों को आधार मानते हुए भी अनजान बनकर अपनी मनमानी करने वाले ढोंगी पण्डित या गुरुवादी सबने अपने-अपने हिसाब से अपना-अपना अभिवादन बना लिया जैसे—जय राम जी की, राम-राम जी, जय सियाराम, जय गोपाला जी, जय राधे-राधे, जय श्रीकृष्णा, जय माता की, सलाम

क्रमशः पृष्ठ 2 पर...

॥ ओ३म्॥

गुरुकुल झज्जर का स्थापना शताब्दी समारोह

सभी आर्यजनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि गुरुकुल झज्जर का शताब्दी समारोह तपोनिष्ठ आचार्य बलदेव जी की अध्यक्षता में बड़ी धूमधाम से 12, 13 मार्च 2016 (रविवार, सोमवार, मंगलवार) को मनाया जा रहा है।

इस अवसर पर बड़े-बड़े राजनेता, संन्यासीगण, विद्वान् व प्रसिद्ध भजनोपदेशकों को आमंत्रित किया जाएगा।

आप सभी आर्यजनों से नम्र निवेदन है कि इस शताब्दी समारोह में उपस्थित होकर धर्मलाभ प्राप्त करें।

निवेदक :

विद्यार्यसभा, गुरुकुल झज्जर मो०नं० 9416055044

हमारा अभिवादन नमस्ते ही.... प्रथम पृष्ठ का शेष.....

वालेकुम, आदाब अर्ज, गुड-मॉर्निंग, गुड-नाइट, गुड-आफ्टरनून, जय गुरुदेव, राधास्वामी, धन-धन सतगुरु तेरा ही आसरा, आदि-आदि। यह सब प्रकार के अभिवादन व्यक्तिवाचक, क्षेत्रीयवाचक, वर्गवाचक हैं, जो साम्प्रदायिकता व संकीर्णता एवं जातिवाद को उभारने वाले होने से देश व समाज के लिए एक अलगाववादी राष्ट्रीय रोग है, जिसका वायरस निरन्तर फैलता ही जा रहा है। आज हमारे देश को पुन: सोने की चिड़िया कहलाने के लिए राष्ट्रीय एकता व अखण्डता की जरूरत है जो उपरोक्त अभिवादनों के प्रयोग करने से खतरे में पड़ जाती है। विभिन्न अभिवादनों के प्रयोग में कुछ लोगों का कहना है कि यह तो अपनी-अपनी विचारधारा है, उनका यह कहना अनुचित है, क्योंकि विचारों का एक होना मित्रता को प्रगाढ़ करता है। विचारधारा में अन्तर वैचारिक टकराव व मित्रता में दरार पैदा करके अलगाववाद को ही उत्पन्न करता है।

और यदि मान भी लिया जाए राम, कृष्ण, राधे-राधे आदि उपरोक्त अभिवादन पहले से चले आ रहे हैं तो क्या ये अभिवादन करने वाले लोग बता सकते हैं कि राम व कृष्ण के जन्म से पूर्व व उनके जीवनकाल में उनके माता-पिता किस शब्द का प्रयोग कर अभिवादन करते थे। गुरुओं व ढोंगी पण्डितों के द्वारा फैलाये गये अभिवादनों का भी उनसे पहले होना साबित नहीं हो सकता क्योंकि उनके द्वारा फैलाये गये अभिवादन भी उनके द्वारा फैलाए गए ढोंग के बाद ही पनपे। इसके अतिरिक्त उपरोक्त अभिवादनों के प्रयोग से सामने वाले व्यक्ति का सम्मान ही नहीं होता। हम यह नहीं कह रहे कि महापुरुषों राम, कृष्ण आदि का नाम नहीं लेना चाहिए परन्तु ऐतिहासिक समय स्थान व परिस्थिति का भी ध्यान रखना हमारा ही कर्त्तव्य है जय श्री राम करके हम यह तो दर्शाते हैं कि हम रामभक्त हैं या राम को अपना आदर्श मानते हैं, लेकिन अपने आदर्श स्वरूप राम जैसे महान् पुरुषों से सम्बन्धित सभी ऐतिहासिक जानकारी रखना भी हमारा कर्त्तव्य है। उदाहरण स्वरूप-कहा जाता है कि राम ने रावण को मारा तो विजय दिवस के रूप में दशहरा त्यौहार मनाया जाता है और राम दीपावली पर घर अयोध्या पर पहुंचे थे इसलिए दीपावली मनाई जाती है। लेकिन राम तो रावण को मारकर अगले दिन ही पुष्पक विमान में बैठकर अयोध्या पहुंच गए थे। तो अब दशहरा और दीपावली के बीच 20 दिन का अन्तर कैसे आ गया? वस्तुत: मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम चैत्र शुक्ल पक्ष प्रथमा जिस दिन उनका राज्याभिषेक होना था 14 वर्ष का वनवास काटकर ठीक उसी दिन अयोध्या लौटे थे तो दीपावली कार्तिक अमावस्या को क्यों मनाई जाती है आदि-आदि अनेक ऐसे प्रश्न हैं जिनको उठाना विषय से अलग होने वाली बात होगी, इसलिए उन पर न जाते हुए हमें अपने आदर्श महापुरुषों का आदर तो करना ही चाहिए लेकिन जब हम किसी से मिलते हैं तो उसका आदर करने के लिए राम और कृष्ण जिस संस्कृति का अनुमोदन करते थे उसी का अनुकरण कर नमस्ते ही करना चाहिए और रही बात पढ़े-लिखे लोगों द्वारा अंग्रेजी संस्कृति से प्रभावित होकर गुड-मॉर्निंग व गुड-इवनिंग आदि के प्रयोग की तो जरा विचार करो कि गुड-मॉर्निंग करने वाले व्यक्ति ने यदि विदेश में (अमेरिका) रहने वाले अपने रिश्तेदार को प्रात: उठकर गुड-मॉर्निंग कहा तो क्या विदेशी रिश्तेदार या मित्र उसका मजाक नहीं बनाएगा? क्योंकि जब यहां प्रात: होती है तो अमेरिका में सायंकाल होता है और यदि प्रात: उठकर गुड-इवनिंग कहा तो साथ में बैठे परिवार के लोग मजाक उड़ायेंगे कि सुबह-सुबह गुड-मॉर्निंग की बजाय गुड-इवनिंग कह रहे हैं। पहली बात तो यह है कि गुड-मॉर्निंग का शाब्दिक अर्थ 'अच्छी सुबह', गुड आफ्टरनून का 'अच्छी दोपहर' और गुड-इवनिंग का 'अच्छी शाम' ऐसा है, लेकिन ये तो दिन की बेलाओं की प्रशंसा है जबकि दिन तो ईश्वर द्वारा बनाया गया है जो सभी के लिए एक समान अच्छा है। इसमें मेरा अभिवादन तो है ही नहीं, दूसरी बात जिस संस्कृति का अनुकरण करने पर हमारा मजाक बन जाये उसका अनुसरण क्यों करें? इस प्रकार परस्पर अभिवादन के लिए जय सियाराम, राम-राम, जय श्रीकृष्णा, राधे-कृष्णा आदि कहने पर भी राम-कृष्ण आदि की जय तो होती है, परन्तु सामने वाले व्यक्ति का अभिवादन नहीं। आजकल हमारे सिख भाई भी परस्पर 'सत् श्री अकाल' का प्रयोग कर अभिवादन करते हैं। जबकि 'गुरुग्रन्थ साहिब' के अनुसार 'नमस्ते-अजाते-नमस्ते-अपाते' आदि का प्रयोग है जो नमस्ते कहने का ही विधान है। यहाँ यह बात विचारणीय है कि दसों गुरु किस अभिवादन वाक्य का प्रयोग करते थे? सच्चाई जो आज भी जनसाखियों से सिद्ध होती है यही है कि परस्पर मिलते समय सभी नमस्ते ही करते थे। स्वयं को आर्य-हिन्दुस्तानी ही समझते थे, धोती पहनते थे और यज्ञोपवीत (जनेऊ) भी धारण करते थे। अत्यन्त दु:ख व आश्चर्य की बात है कि यह सब कुछ उनके धर्मग्रन्थों में विद्यमान होते हुए भी वे अलगाववादी प्रकृति होने के कारण जानते हुए भी मारने से इंकार करते हैं। 'सत् श्री अकाल' तो उनके द्वारा प्रयोग किया जाने वाला युद्धकालीन जयघोष अल्ला-उ-अकबर है। ठीक ऐसे ही युद्धकाल में हमारे महापुरुषों का आदर्श रखा जाता था और जय श्रीराम व जय श्रीकृष्ण, जय दुर्गा, जय मां काली तथा हर-हर महादेव आदि-आदि जयघोषों का प्रयोग किया जाता था, लेकिन मैंने पहले भी स्पष्ट किया है कि परस्पर अभिवादन के लिए हमें वैदिक संस्कृति के अनुसार नमस्ते का ही प्रयोग करना चाहिए, क्योंकि नमस्ते का प्रयोग करने पर परस्पर समर्पण का भाव स्पष्ट होता है एक-दूसरे के प्रति सम्मान का भाव दिखता है। जब दोनों ओर से इस प्रकार की नम्रता की अभिव्यक्ति हो तो प्रेम बढ़ेगा ही और परस्पर ज्ञान का आदान-प्रदान प्रारम्भ होने का सिलसिला जारी हो जाएगा।

सन् 1953 ई० में जब भारत के प्रधानमंत्री पण्डित जवाहर लाल नेहरू डलेश वार्ता के अवसर पर अमेरिका में फोटोग्राफरों से निरन्तर हाथ मिलाने के कारण थक गए तो कहा कि हमें भारतीय ढंग से अभिवादन करना चाहिए। इसके अलावा भारतीय राजदूतों द्वारा विदेशों में विभिन्न समारोहों के अवसरों पर सर्वत्र नमस्ते का ही प्रयोग होते हुए पाया जाता है। भारत के प्रधानमंत्री जब रूस की यात्रा पर गये थे तो उनके स्वागतार्थ मार्ग में पट्टियों पर नमस्ते और स्वागतम् ही लिखा था, जब रूस के प्रधानमंत्री खुश्चेव और प्रधान बुलगानिन भारत आये थे तो उन्होंने सर्वत्र हाथ जोड़कर ही अभिवादन किया। जब अमेरिका में सर्वधर्म सम्मेलन हुआ तब विचार हुआ कि किसी एक अभिवादन को सर्वमान्यता देकर फिर उसका प्रयोग किया जाए इसके निर्णय के लिए वहाँ पर उस समय अनेक मतावलम्बियों ने अपने-अपने अभिवादनों की व्याख्या, प्रशंसा व विशेषताएं स्पष्ट की। उसी समय वहां पर भारत के प्रतिष्ठित वैदिक विद्वान् पण्डित अयोध्या प्रसाद जी वैदिक रिसर्चस्कॉलर कोलकाता ने 'नमस्ते' शब्द की विशेषताओं पर प्रकाश डाला और व्याख्या की जिसका परिणाम यह निकला कि यह नमस्ते शब्द वहां पर सभी को इतना प्रिय लगा कि सर्वसम्मति से अभिवादन के रूप में केवल नमस्ते को ही सबके द्वारा अपनाया गया। अत: हमें समस्त बे-सिर पैर के अवैदिक अभिवादनों को त्याग कर भारतीय (आर्यावर्तीय) पुरातन अभिवादन नमस्ते का ही प्रयोग करना चाहिए। सभी प्राचीन ग्रन्थों में नमस्ते करने का प्रमाण—बड़ों व छोटों को भी नमस्ते ही करने का विधान है।

वेदों में नमस्ते—

1. **जेष्ठाय नम:, कनिष्ठाय नम:।**
   मानवधर्म वेद
   (बड़ों के लिए नमस्ते, छोटों के लिए नमस्ते।)
   नमस्ते रुद्र मन्यवे।
   (यजु:० अ० 16)।

नमस्ते करने के ऐतिहासिक प्रमाण

2. यमाचार्य ने नचिकेता को नमस्ते की—**नमस्तेऽस्तु ब्रह्मन् स्वस्ति मेऽस्तु।** (कठो० 1.1.9)
3. गार्गी ने याज्ञवल्क्य को नमस्ते की—**सा होवाच नमस्तेऽस्तु याज्ञवल्क्य!** (बृहद्० 3.8.5)
4. जनक ने याज्ञवल्क्य को नमस्ते की—**नमस्तेऽस्तु याज्ञवल्क्यानु मा शाधीति।** (बृहद्० 4.2.1)
5. विश्वामित्र ने वशिष्ठ को नमस्ते की—**नमस्तेऽस्तु गामिष्यामि** (वाल्मी०रा०, बाल०स० 52, श्लोक 17)
6. सीता ने राक्षस को नमस्ते की—**नमस्ते राक्षसोत्तम!** (वाल्मी० रा०, आरण्य०स० 4, श्लोक 3)
7. देवयानी ने शुक्राचार्य को नमस्ते की—**नमस्ते देहि मामस्मै** (महाभारत, आदि०अ० 51/30)
8. विदुर ने दुर्योधन को नमस्ते की—**यथा तथा तेऽस्तु नमश्च तेऽस्तु।** (महाभारत, सभा०अ० 63/19)
9. नल ने दासी को नमस्ते की—**गच्छ भद्रे नमोऽस्तु ते।** (महा०, वन०अ० 75/28) शेष पृष्ठ 7 पर...

॥ ओ३म् ॥

अकेले प्रभुभक्त का विजय

युधः एकः सं सृजति यो अस्या एक इद्वशी।
तरांसि यज्ञा अभवन्तरसां चक्षुरभवद्वशा॥ (अथर्व० 10.10.24)

अर्थ—(यः) जो साधक (अस्याः) इस पारमेश्वरी शक्ति को (एक इद् वशी) अकेला, एकान्त में योगाभ्यास द्वारा वशी अर्थात् अपने वश में कर लेता है वह (एकः) अकेला ही (युधः) बुराइयों के विरुद्ध युद्ध, संघर्ष (संसृजति) छेड़ देता है। इस समय उसके (यज्ञाः) यज्ञादि उत्तम कर्म (तरांसि) जीवन-संग्राम में पार ले जाने वाले (तरांसि अभवन्) नौका या रथ आदि वाहन रूप हो जाते हैं और (वशा) पारमेश्वरी शक्ति उन (तरसाम्) योगी के सहयोगी यज्ञ रूप वाहनों का (चक्षुरभवत्) मार्गदर्शन करती है।

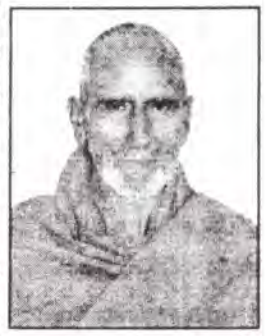
पूज्य आचार्य बलदेव जी

जीवन एक संग्राम है। जो यहाँ आकर उससे दो-दो हाथ करता है उसका विजय होता है। युद्धादि में सेना, आयुध और वाहन तथा अच्छे सारथियों की आवश्यकता होती है। यदि किसी में अकेले लड़ने का साहस नहीं है तो वह अपने से शक्तिशाली का दामन पकड़ लेता है।

जब किसी को अपना सहायक ही बनाना है तो फिर क्यों नहीं उसे ही ढूंढे जो सबसे शक्तिशाली हो। सब ओर दृष्टिपात करने पर सर्वशक्तिमान् एक ईश्वर ही दृष्टिगत होता है। उसकी स्तुति-प्रार्थना-उपासना करने पर सचमुच ही वह भक्त के वश में हो जाता है। '**यो अस्या एक इद् वशी**' जब वह कृष्ण की भाँति अर्जुन का सारथि बन जाता है तब साधक '**एकः युधः सं सृजति**' अकेला ही अन्याय, अत्याचार, अज्ञानरूपी बाह्य शत्रु काम, क्रोधादि आभ्यान्तर शत्रुओं से मुकाबला करने लगता है। याद रखो जो ईश्वर से डरता है वह दूसरों से भयभीत नहीं होता और जो ईश्वर का भय न मानकर अधर्म का आचरण करते है उसे पग-पग पर भय का सामना करना पड़ता है। साधक के वश में हुआ जगन्नियामक प्रभु उसका सारथि बन उसे सर्वत्र विजयी बना देता है।

इस साधक का बल यज्ञादि कर्म हैं। ये ही उसके आयुध और वाहन हैं जिसके दम पर वह आसुरी शक्तियों से अकेले ही लोहा लेने के लिए निकल पड़ता है। धीरे-धीरे उसके सहयोगी भी जमने लगते हैं और उसका कारवां बढ़ता ही चला जाता है।

कई बार ऐसा भी होता है कि ऐश्वर्य के मद में वह अपने पथ-प्रदर्शक को भूल जाता है। परिणामस्वरूप वह पुनः अवनति के गर्त में फँस जाता है। जिन यज्ञादि के आधार पर वह आगे बढ़ा था उनका परित्याग कर देने से वह स्वयं किसी एक पक्ष का समर्थक बन जनता की भीड़ में खो जाता है। वह यह भूल जाता है कि जिस सीढ़ी का सहारा लेकर वह इतनी ऊँचाई पर पहुँचा है उस सीढ़ी के खिसकने पर उसे धड़ाम से नीचे गिरना पड़ेगा, जिसमें उसके जीवन को भी खतरा है। इसलिये वेद में कहा '**तरांसि यज्ञा अभवन्**' यज्ञादि उत्तम कर्म उसके बल अर्थात् सहायक हुये तथा '**तरसां चक्षुरभवद् वशा**' वह पारमेश्वरी शक्ति उन बलों या सहायक साधनों की मार्गदर्शिका बनी जिसके बतलाए मार्ग पर चलकर ऐसा साधक अन्धकार को भगा सर्वत्र ज्ञान का प्रकाश करता हुआ निरन्तर आगे बढ़ता जाता है।

सबसे बड़ा बल आत्मिक बल है। महर्षि दयानन्द जी सत्यार्थप्रकाश में लिखते हैं—"**ईश्वर की भक्ति करने से आत्मा का बल इतना बढ़ेगा कि वह पहाड़ जैसी विपत्ति आने पर भी अपने कर्त्तव्य से विचलित नहीं होगा।**" जब ईश्वरभक्ति से इतना सामर्थ्य उत्पन्न होता है तो क्यों न '**बलमसि बलं मयि धेहि**' का जाप किया जाए।

(वेदस्वाध्याय से साभार) —आचार्य बलदेव

सत्यार्थप्रकाश

समाज में फैले अन्धकार, अन्धविश्वास, गुरुडमवाद, भ्रूणहत्या आदि बुराइयों को मिटाने के लिये सत्यार्थप्रकाश हरयाणा के प्रत्येक घर तक पहुंचाने का यत्न किया जाये।—आचार्य बलदेव

सितम्बर 2015 के दौरान...

वेदप्रचार मण्डल जिला जीन्द के तत्त्वावधान में किया गया प्रचार कार्य

❑ कर्णदेव शास्त्री, महामंत्री, वेदप्रचार मण्डल जिला जीन्द

वेदप्रचार मण्डल जिला जीन्द समय-समय पर शहरों एवं गांवों में प्रचार कार्य का आयोजन करता रहता है। इस बार सितम्बर 2015 के लिये हमने प्रारम्भ में ही 5-6 आयोजनों की रूपरेखा बना ली थी। निर्णय कर लिया था कि शुक्रवार दिनांक 4.9.15 को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी की पूर्व संध्या पर एक भव्य सार्वजनिक कार्यक्रम किया जाएगा।

निर्णयानुसार जींद में मुख्य डाकघर के सामने सायं 4.30 बजे से रात्रि 8 बजे तक जन्माष्टमी समारोह किया गया जिसमें मुख्य वक्ता गुरु विरजानन्द आर्ष गुरुकुल मथुरा के संचालक आचार्य स्वदेश जी तथा भजनोपदेशक पं० संदीप आर्य, करनाल से थे। आयोजन की अध्यक्षता गुरुकुल कालवा के सुयोग्य आचार्य श्री राजेन्द्र जी ने की। श्री धर्मवीर जी दहिया XEN पंचायती राज, सिरसा हमारे विशिष्ट अतिथि थे। वैदिक कन्या गुरुकुल ऐंचरा कलां की कन्याओं ने कार्यक्रम में भाग लिया। उक्त आयोजन में मुख्य वक्ता आचार्य स्वदेश ने श्रीकृष्ण के विषय में फैलाई गई भ्रान्तियां, उन पर लगाये गये अनर्गल लांछन, यथा माखनचोर, गोपियों के वस्त्र उठाने वाला, कुब्जा प्रसंग, राधा के साथ रंग-रलियां, 16108 रानियां होना आदि का सप्रमाण खण्डन करते हुए उनके सही समुज्ज्वल स्वरूप एवं चरित्र पर विस्तार से प्रकाश डाला। अन्य वक्ताओं ने भी श्रीकृष्ण के महान् ऐतिहासिक युग प्रवर्तक व्यक्तित्व से प्रेरणा लेने का संदेश दिया। सम्मान्य स्वामी कर्मपाल जी का आशीर्वाद भी हमें प्राप्त हुआ। यह बहुत ही सफल एवं प्रभावशाली आयोजन था जिसमें लगभग 300-350 की उपस्थिति थी।

प्रचार हेतु हमने जीन्द के समीपवर्ती कुछ गांवों का चयन किया। रविवार दिनांक 13 सितम्बर को हमने गांव अहीरका में सायं 5 से 7 बजे तक यज्ञ, भजन, वेदोपदेश करवाया। यज्ञ एवं वेदोपदेशक हमारे स्थानीय विद्वान् श्री देशराज जी आर्य ने किया। सितम्बर 20, रविवार सायं 5 से 7 बजे तक का इसी प्रकार का कार्यक्रम गांव जलालपुर कलां में रखा गया जिसमें प्रो. ओमकुमार आर्य ने यज्ञ करवाया तदुपरान्त संक्षेप में यज्ञ का महत्त्व बतलाया और वेद के अनुसार आदर्श गृहस्थ कैसा हो इस पर प्रकाश डाला।

शनिवार दिनांक 26 सितम्बर को सायं 5 से 7 बजे तक गांव अकालगढ़ (समीप जुलाना) में श्री रोहतास आर्य के यहां पारिवारिक सत्संग रखा गया। इसमें देवर्षि विद्यापीठ नंदगढ़ के प्राचार्य श्री सुरेन्द्र शास्त्री का भी सहयोग हमें मिला। उन्होंने और वेदप्रचार मण्डल जिला जीन्द के महामन्त्री श्री कर्णदेव शास्त्री ने सत्संग को सम्बोधित किया, यज्ञ के ब्रह्मा प्रो. ओमकुमार आर्य थे।

इसी शृंखला में रविवार 27 सितम्बर का कार्यक्रम सायं 5 से 7 बजे तक गांव अमरहेड़ी के मुख्य चौक में रखा गया। यज्ञ व यज्ञोपरान्त उपदेश प्रो. ओमकुमार आर्य ने किया। आयोजकों ने बतलाया कि इस कार्यक्रम के लिये घी, समाग्री आदि के रूप में लगभग 400-450 रुपये का सहयोग श्रीमती दर्शनार्या (जींद) से प्राप्त हुआ।

जैसा कि मैंने श्री सुरेन्द्र शास्त्री के नाम का उल्लेख पहले भी किया है जो कि बहुत ही वेदनिष्ठ, ऋषिभक्त, गोभक्त नवयुवक हैं, देवर्षि विद्यापीठ नंदगढ़ के प्राचार्य हैं और समय-समय पर अपने विद्यालय में यज्ञादि करवाते रहते हैं, महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय, धार्मिक, सांस्कृतिक, पर्वादि पर सभाओं के माध्यम से अपने छात्र-छात्राओं को अच्छे संस्कार प्रदान करते रहते हैं। उनकी प्रो. ओमकुमार आर्य के प्रति पर्याप्त श्रद्धा है, अन्य विद्वानों को भी वे आमंत्रित करते रहते हैं। इस बार अमर शहीद भगत सिंह की 108वीं जयन्ती के उपलक्ष्य में उन्होंने सोमवार दिनांक 28 सितम्बर को सुबह 11 से 12.30 तक विद्यालय में 'भगतसिंह जयन्ती समारोह' रखा जिसमें मुख्य वक्ता प्रो. ओमकुमार आर्य थे जिन्होंने लगभग एक घण्टा बीस मिनट के अपने ओजस्वी व्याख्यान के द्वारा बताया कि किस प्रकार महर्षि दयानन्द से प्रेरणा लेकर, वैदिक धर्म में दीक्षित होकर सरदार अर्जुन सिंह ने अपने पुत्र, पौत्रों को संस्कारवान् बनाया, राष्ट्रप्रेम से ओतप्रोत उनका सारा परिवार, दादा से पौत्र तक की

क्रमशः पृष्ठ 6 पर...

डेंगू से बचाव और उपचार के बारे में जागरूक कर रहा है आर्य वीर दल जीन्द

आर्य वीर दल जीन्द जिले के लोगों को डेंगू से बचाव और उपचार के बारे में जागरूक करने में लगा है। आर्य वीर दल जीन्द, आर्यसमाज राम नगर एवं जिले भर की अन्य आर्य संस्थाओ के सहयोग से लोगो तक डेंगू के उपचार व बचाव की आवश्यक जानकारी पहुंचा रहा है।

आर्य वीर दल जीन्द के मण्डलपति यज्ञवीर आर्य ने बताया कि आर्यसमाज और उसका युवा संगठन आर्यवीर दल सदैव से समाज सेवा के कार्यो में अग्रणी रहता है। जून मास में गुरुकुल कालवा में आर्य वीर दल द्वारा युवाओं के सर्वांगीण विकास के लिए व्यायाम प्रशिक्षण एवं चरित्र निर्माण शिविर का आयोजन किया गया था। कल से भी तीन दिवसीय विशिष्ट प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया जा रहा है।

अब लोग डेंगू के प्रकोप से भयभीत और परेशान है। कुछ डॉक्टर व अन्य लोग भी लोगों के भय और मजबूरी का फायदा उठा रहे है। लोग महंगा इलाज करवाने को मजबूर है। बकरी का दूध 2000 प्रति लीटर तक बिक रहा है। ऐसे में आर्य वीर दल जीन्द द्वारा एक विशेष जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है ताकि लोग न केवल आर्थिक रूप से ठगे जाने से बचे, बल्कि मानसिक रूप से परेशान न हो। इस बारे में बाकायदा एक इश्तिहार छपवाकर आर्य वीर दल जीन्द द्वारा लोगों में वितरित किया जा रहा है। इस इश्तिहार में डेंगू से बचाव तथा इसके उपचार सम्बन्धी अनेक देशी नुस्खों के विषय में बताया गया है ताकि लोग परेशान न होकर अपनी सुविधानुसार कुछ नुस्खों का प्रयोग कर स्वस्थ हो सके। आर्ष महाविद्यालय गुरुकुल कालवा, आर्य समाज सफीदों, आर्य समाज मुआना, आर्य समाज डाहौला, आर्य समाज किनाना, आर्य समाज भागखेडा आदि अनेक आर्य संस्थाएँ इस जागरूकता अभियान को आगे बढ़ा रही है और अपने आस पास के क्षेत्र में प्रचार करने में लगी है। इस इश्तिहार को व्हाट्सऐप, हाईक, फेसबुक तथा अन्य सोशल मीडिया के माध्यम से भी अधिक से अधिक प्रचारित किया जा रहा है। यज्ञवीर आर्य ने बताया कि यदि प्रशासन समय रहते फॉगिंग और दवा छिड़काव पर ध्यान दे तो न केवल अस्पतालों से भीड़ काम होगी, बल्कि सरकार पर खर्च भी बचेगा। बचाव का यह कार्य सरकार द्वारा इलाज पर होने वाले खर्च से बहुत काम पैसे में निपट जायेगा। बचाव का यह तरीका सस्ता और ज्यादा कारगर साबित होगा। इससे आम आदमी बीमारी से बचा रहेगा तो उसकी जेब पर भी बोझ नहीं पड़ेगा। इसमें लोगो से भी अपील की गई है कि वे समय रहते प्रशासन से मिलकर अपने क्षेत्र में फॉगिंग और दवा छिड़काव सुनिश्चित कराएं।

मुआना, भागखेड़ा, डाहौला और किनाना में भी आयोजित होगे आर्यवीर प्रशिक्षण शिविर

इसके बाद 5 अक्टूबर से 11 अक्टूबर तक मुआना, 12 अक्टूबर से 18 अक्टूबर तक भागखेड़ा, 19 अक्टूबर से 25 अक्टूबर तक डाहौला तथा 26 अक्टूबर से 1 नवम्बर तक किनाना में सात दिवसीय आर्यवीर प्रशिक्षण शिविर आयोजित किये जायेंगे। प्रत्येक गाँव में शनिवार और रविवार को भजनों का सुन्दर एवं मधुर कार्यक्रम आयोजित किया जायेगा जिसमें लोगो को आर्य जगत के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक प. रामनिवास आर्य और प. सत्यपाल मधुर के गीत सुनने को मिलेंगे। प्रत्येक गाँव में रविवार को भव्य समापन समारोह आयोजित किये जायेंगे। आर्य वीर दल जीन्द के मण्डलपति व्यायाम शिक्षक यज्ञवीर आर्य ने लोगों का आह्वान किया कि अपने दोस्तों और रिश्तेदारों को भी शिविर की सूचना अवश्य दें। आर्य समाज एवं अन्य आर्य संस्थाओं के साथियों से निवेदन है कि अपनी संस्था के ज्यादा से ज्यादा लोगों को शिविर में अपने बच्चों को भेजने हेतू प्रेरित करें।

यज्ञवीर आर्य, जीन्द 9255935328

जल अमूल्य निधि है, इसका सोच-समझकर प्रयोग करें, क्योंकि जल है तो कल है।

देवता का ऋषित्व

❑ प्राचार्य अभय आर्य

सत्य को जानकर उसे यथावत् नि:स्वार्थ दूसरों को जानकारी देना ही श्रेष्ठ धर्मात्मा विद्वानों का कार्य है। सत्य ज्ञान के अथाह भण्डार वेद को यथावत् जानकर देव दयानन्द ने अपार कष्ट सहकर, अपने प्राणों तक की आहुति देकर उस ज्ञान से संसार के कल्याण का प्रयास किया।

आचार्य अभय आर्य

मन्त्र द्रष्टा ऋषि ने कितने ही तथ्यों पर सत्य का प्रकाश डालकर मानवता के कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया। 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' में अथर्ववेद के मंत्र 'अष्टाविंशानि..... नमोऽहोरात्राभ्यामस्तु' के भावार्थ में ऋषि जी उपासना योग को सेवन करने तथा कल्याण में प्रवृत्त रहने के लिए जिन अट्ठाईस के नाम गिनाते हैं, उनमें एक 'बल' भी है। वास्तव में बल प्राप्त करने का यही औचित्य है कि कल्याणकारी कार्यों में उसका उपयोग हो तथा उपासना योग के लिए उसे आधार बनाएं तथा उपासना द्वारा ही उस 'बल' के संरक्षण का सामर्थ्य भी प्राप्त करें।

आज इस वेद विद्या के उपदेश के अभाव में कितने ही बने बनाए नवयुवक धूल में मिल जाते हैं। अनेक ऐसे नवयुवक देखने में आते हैं जो व्यायाम और पौष्टिक खान-पान द्वारा सुन्दर, बलिष्ठ, आकर्षक शरीर बना लेते हैं। लेकिन ऐसा होने के बाद इनमें से बहुत सारे राजसिक का प्रवृत्ति का शिकार होकर तड़क-भड़क के कपड़े पहनने लगते हैं, व्यर्थ में इधर-उधर घूमने लगते हैं। बाद में तामसिक खान-पान शराब, सिगरेट, मांस का शिकार बनकर नष्ट हो जाते हैं।

अत: 'बल' प्राप्त करके उसका प्रयोग मंगल कार्यों में करना चाहिए। ऐसा करते हुए जीवन के मुख्य लक्ष्य ब्रह्मप्राप्ति के लिए उपासना योग में इस 'बल' का प्रयोग करें। दश इन्द्रिय, दश प्राण, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार, विद्या, स्वभाव, शरीर, इन सत्ताईस का औचित्य भी इसी प्रकार के प्रयोग में है तथा इसी में जीवन की सार्थकता है। उपासना योग का सामर्थ्य, धैर्य भी उसी परमपिता परमात्मा से मांगें। इसी मंत्र के भाषार्थ में ऋषि जी लिखते हैं, " हे परम ऐश्वर्ययुक्त मङ्गलमय परमेश्वर! आपकी कृपा से मुझको उपासना योग प्राप्त हो तथा उससे मुझको सुख भी मिले।" हम योग द्वारा बुराइयों से बचने का सामर्थ्य प्राप्त करें और उस सामर्थ्य से योग को प्राप्त करें। इस हेतु परमात्मा को रात-दिन नमस्ते करें। **धन्य ऋषि दयानन्द! धन्य आपके उपकार!**

शहीद भगतसिंह के जन्म दिवस पर गीत

जाने क्या सुनेंगे आप, जाने क्या गाऊँगा मैं,
दर्द को अपने दिल में, भला कब तक दबाऊँगा मैं।
मैं वक्त से पंजा लड़ाने की, हिम्मत करने वाला,
लिखते-लिखते पानी था, गाते-गाते आग हो जाऊँगा मैं।
ऐ भगत सिंह तू जिन्दा है, हर एक लहू के कतरे में,
हर एक लहू के कतरे में, इंकलाब के नारे में,
तूने तो तब भी बोला था, आजादी नहीं धोखा है,
पूरी मुक्ति नहीं है यारो, गोरों के संग सौदा है,
इस झूठे जश्न की रौनक में, फंसे हुए किसानों में, ऐ भगत सिंह तू....।
इतिहास में भी हम भूखे थे और आज भी ठोकर खाते हैं,
जिस खादी पर रखा भरोसा, वह आज भी धोखा देते हैं,
कोई राम नाम बलहार पुकारे, आज भी जाने जाते हैं,
अब याद हे भगता तेरी आती, आग लगी है सीने में, ऐ भगत सिंह तू....।
अंधेरे का ये तख्त हमें, ताकत से अब ठुकराना है।
हर सांस जहां लेगी उड़ान, उस लाल सुबह को लाना है।
शहीदों की राह पर मर मिटने की क्रान्तिकारी उम्मीदों में, ऐ भगतसिंह तू..।
जिनकी शहादत से महकता है ये चमन, उन शहीदों को नमन।
जिनके दम से चहकता है यह वतन, उन शहीदों को नमन।
नमन उन माँओं के जिन माँओं ने उन्हें किया पैदा। ऐ भगत सिंह तू....।
जिस माटी में पले बढ़े और मिल गए, उस देश की माटी को
मेरा बार-बार नमन।

—जगदीश आर्य डीपीई, आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल, पानीपत

वेदों की ओर लौटो कार्यक्रम

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा मार्च 2015 से वेदप्रचार रथ द्वारा गांव-गांव व मोहल्लों में जाकर प्रतिदिन वेदप्रचार कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। इसी कार्यक्रम में क्रमश: निम्न प्रकार वेदप्रचार कार्यक्रम आयोजित किये गये।

1. 19 सितम्बर 2015 को डॉ. स्वरूप सिंह वरि० मा० मॉडल स्कूल, सांघी (रोहतक) में यज्ञोपरान्त वेदप्रचार कार्यक्रम सुबह 8.30 बजे किया गया। विद्यालय के प्रिंसिपल श्री जयपाल सिंह दहिया व स्टाफ ने पूर्ण सहयोग दिया।
2. 26 सितम्बर 2015 को सायं 6.30 बजे से 10.30 तक ग्राम सांघी (रोहतक) में भारी जनसमूह ने वेदप्रचार कार्यक्रम में हिस्सा लिया।
3. 27 सितम्बर 2015 को सायं 9.30 बजे से 10.30 तक ग्राम खिड़वाली (रोहतक) में भारी जनसमूह ने वेदप्रचार कार्यक्रम में हिस्सा लिया।
4. 28 सितम्बर 2015 को 9.30 बजे से 10.30 तक तिलक नगर (रोहतक) में भारी जनसमूह ने वेदप्रचार कार्यक्रम में हिस्सा लिया। इस कार्यक्रम में मुख्यत: श्री करतार सिंह राठी, श्री सुभाष सांगवान का विशेष योगदान रहा।
5. 29 सितम्बर 2015 को 7.00 बजे से 10.00 तक ग्राम जिंदरान (रोहतक) में वेदप्रचार कार्यक्रम का आयोजन श्री रामफल आर्य द्वारा करवाया गया।
6. 30 सितम्बर 2015 को प्रात: 7.00 बजे से 10.00 तक पुन: ग्राम सांघी (रोहतक) में भारी जनसमूह द्वारा वेदप्रचार कार्यक्रम किया गया।

उपरोक्त कार्यक्रमों में मुख्य वक्ता हरियाणा गोशाला संघ के प्रधान आचार्य योगेन्द्र जी ने देश में गोमाता की भयावह स्थिति पर प्रकाश डाला तथा गोमाता की दयनीय स्थिति के सम्बन्ध में चलचित्र भी दिखाया गया। सभा के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री सत्यपाल मधुर व श्री जगदीश आर्य तथा आचार्य रामदयाल की भजन मण्डलियों के प्रेरणादायक भजन हुए। श्री सुरेन्द्र दहिया ने भी पंचमहायज्ञों व मुहूर्त आदि पर प्रकाश डाला। श्री सुभाष सांगवान व श्रीमती दया आर्या ने भी भजनों के द्वारा अन्धविश्वास व बच्चों के सर्वांगीण विकास पर प्रकाश डाला। इनके अतिरिक्त श्री कर्णसिंह मोर, आचार्य अभय सिंह कुण्डू, शम्भूदयाल शास्त्री आदि का विशेष सहयोग रहा।

उर्दू से हिन्दी में अनुदित आदर्श भजन माला प्रथम, द्वितीय, तृतीय खण्ड का प्रकाशन

यह पुस्तक उर्दू पाण्डुलिपि में जीर्ण-शीर्ण अवस्था में थी। कुंवर जौहरी सिंह जसराना रचित आदर्श भजन माला उनके द्वारा हस्तलिखित उर्दू में लिखी उनके सुपुत्र सुखवीर सिंह व कुलदीप सिंह से प्राप्त करके उनका हिन्दी रूपान्तरण किया गया। इसके संपादन और प्रकाशन का कार्य डॉ. बलवीरसिंह शास्त्री भैंसवाल कलां तथा श्री योगेन्द्र शास्त्री भैंसवाल ने किया है। प्रकाशन में महावीर शास्त्री बलियाणा व श्री वीरेन्द्र जी बी.ई.ओ. रोहतक का विशेष सहयोग रहा है।

इन भजनों में समाज-सुधार, आर्यसमाज का प्रचार, वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार, स्त्रीशिक्षा, पाखण्ड-खण्डन, आर्य वीर-वीरांगनाओं की जीवन गाथाएं, गोसेवा, मानवीय धर्म सत्य, अहिंसा का धर्मपालन, ब्रह्मचर्य का महत्त्व, गुरुकुलीय शिक्षा ही उत्तम शिक्षा है। 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का प्रचार सामाजिक समरसता, विद्या की महत्ता, उद्यम की महिमा, नशाबंदी, शिष्टाचार, देशभक्ति की भावनाओं से ओतप्रोत यह समग्र साहित्य है। द्वितय खंड में महर्षि दयानन्द के जीवन को काव्यात्मक शैली में लिखा है। स्वामी जी के जीवन पर यह इतना विस्तृत काव्य शायद यह प्रथम काव्य है।

इस पुस्तक का विमोचन सभा के मासिक सत्संग में दिनांक 6 सितम्बर 2015 को आचार्य बलदेव जी, डॉ. सुरेन्द्र कुमार, मा. रामपाल आर्य, कुलदीप सिंह आर्य व बहन दया आर्या द्वारा किया गया।

गंगाशरण आर्य 'साहित्य सुमन' को बधाई एवं गृहस्थियों को सुझाव

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख-पत्र 'आर्य प्रतिनिधि' 14.9.2015 में गंगाशरण आर्य 'साहित्य सुमन' संपर्क-डीएनवाई व मॉस्टर कॉस्मिक एनर्जी हीलर, चरित्र निर्माण मंडल, सैनी मौहल्ला, ग्राम-शाहबाद, मोहम्मदपुर, नई दिल्ली-61 मो० 9871644195 पर **राष्ट्र की उन्नति के लिए गृहस्थ को संवारो** महत्त्वपूर्ण लेख छपा है।

इस लेख के लिए गंगाशरण आर्य 'साहित्य सुमन' जी को बधाई व धन्यवाद। मेरा गृहस्थियों से नम्र निवेदन है कि पत्रिका मंगाकर इस लेख को पढ़ो तथा योगिराज श्रीकृष्ण जी, वीर बहादुर श्री अर्जुन जी के जीवन से प्रेरणा लेकर आदर्श गृहस्थी बनो। मेरा भी सभी गृहस्थियों से सुझाव है कि संयमी बनकर देश व समाज को चरित्रवान्, देशभक्त, वैदिक विद्वान्, गोभक्त, वेदरक्षक, महिला रक्षक, समाज-सुधारक, दृढ़ ईश्वर विश्वासी, सच्चा आर्य, ईमानदार, सदाचारी, निर्भीक गुणों वाली सन्तान पैदा करो ताकि माता-पिता, परिवार, समाज व देश का नाम ऊँचा करें। पुन: अनुरोध है कि वेदमार्ग पर चलो, इस लेख को अवश्य पढ़ो।

-वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही, हिसार

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

1. आर्यसमाज, गौकर्ण मार्ग, रूपनगर (रोहतक)	7 से 11 अक्तू० 2015
2. आर्यसमाज धनौंदा ब्लाक-कनीना (महेन्द्रगढ़)	27 से 29 अक्तू० 2015
3. आर्यसमाज तिलक नगर, रोहतक	24 से 25 अक्तू० 2015
4. **आर्य युवा महासम्मेलन, पानीपत** स्थान-आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल, पानीपत	29 नवम्बर 2015
4. 18वां सत्यार्थप्रकाश महोत्सव सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर (राज०)	31 अक्तू० से 2 नव० 2015
5. आर्यसमाज थर्मल कालोनी (पानीपत)	6 से 8 नव० 2015

रक्तदान शिविर सम्पन्न

आर्यसमाज मन्दिर के संरक्षक जगदीश सींवर शेखूपुरिया के नेतृत्व में शिवशक्ति ब्लड बैंक में रक्तदान किया। जगदीश सींवर ने बताया कि रक्तदान एक जीवन दान होता है। रक्तदान से आदमी कभी बीमार नहीं होता और स्वस्थ व्यक्ति में खून 24 घण्टों में पूरा हो जाता है। श्रीमान् जगदीश सींवर के नेतृत्व में सिरसा जिला अन्तर्गत गांव बचेर से मदनलाल, रविकुमार ने रक्त दान किया तथा मैडम नीलम शर्मा ने भी रक्तदान किया।

जगदीश सींवर ने बताया कि अगर अचानक ऐसी कोई दुर्घटना हो जाए तो हमारे शरीर में काफी रक्त की कमी आ जाती है। उस समय हमारा दान किया गया रक्त गरीब लोगों के काफी काम आता है। रक्तदान करने से शरीर में फोड़ा, फुंसी, खुजली तथा मुंह पर परछाइयाँ जैसी बीमारियां नहीं होती। आप सब सिरसावासियों से विनम्र निवेदन है कि डेंगू जैसी भयंकर बीमारी फैल चुकी है। इसके इलाज के लिए शिवशक्ति ब्लड बैंक या अन्य ब्लड बैंकों में अधिक से अधिक खून की आवश्यकता है। इसलिए आप सभी अपना कीमती रक्तदान करके बीमार व्यक्ति को एक नया जीवन दें। इन बच्चों को मैडल व रक्तदान का सर्टिफिकेट देकर सम्मानित किया गया।

—जगदीश सींवर, 9416253534

स्वास्थ्य-चर्चा....

पेट के रोगों में गुणकारी—नींबू

अम्लता (एसिडिटी)-खाना खाने के बाद एक कप पानी में आधा नींबू, जरा-सा खाने का सोडा मिलाकर प्रतिदिन दो बार पीयें।

दोपहर के भोजन से आधा घण्टा पहले नींबू की मीठी शिकंजी दो महीने तक पियें। खाने के बाद न पियें।

खट्टी डकारें-यदि खट्टी डकारें आती हों, तो गरम पानी में नींबू निचोड़कर पियें।

पेददर्द-पचास ग्राम पोदीना की चटनी पतले कपड़े में निचोड़कर रस निकालकर उसमें आधा नींबू निचोड़े। दो चम्मच शहद और चार चम्मच पानी मिलाकर पीने से पेट का तेज दर्द शीघ्र बन्द हो जाता है।

एक नींबू, काला नमक, काली मिर्च, चौथाई चम्मच सोंठ, आधा गिलास पानी में मिलाकर पीने से पेटदर्द ठीक हो जाता है!

अजवाइन, सेंधा नमक को नींबू के रस में भिगोकर सुखा लें। पेटदर्द में एक चम्मच चबाकर, पानी पियें। इस प्रकार हर एक घण्टे में जब तक दर्द रहे, लें। पेट पर सेंक करें।

कीड़ों के कारण पेट में दर्द हो, पेट में कीड़े हों, तो सात दिन दो बार नित्य नींबू एक फांक में पिसा हुआ जीरा, काली मिर्च, काला नमक भरकर चूसें।

मूली पर नमक, नींबू, काली मिर्च डालकर खाने से अपच का पेट का दर्द ठीक हो जाता है।

आधा कप मूली के रस में आधा नींबू निचोड़कर नित्य दो बार पीने से खाना खाने के बाद होने वाला पेट दर्द ठीक हो जाता है।

कब्ज-गरम पानी और नींबू प्रातः भूखे पेट खाएं। एक गिलास हल्के गरम पानी में एक नींबू निचोड़कर एनीमा लगाएं। पेट साफ हो जाएगा। कीड़े भी निकल जायेंगे।

एक गिलास गर्म पानी में एक नींबू, दो चम्मच अरण्डी का तेल (कैस्टर ऑयल) मिलाकर रात को पियें।

एक चम्मच मोटी सौंफ तथा पांच काली मिर्च चबायें, फिर एक गिलास गर्म पानी, एक नींबू और काला नमक मिलाकर नित्य पियें।

उल्टी-आधा कप पानी में पन्द्रह बूंद नींबू का रस, भुना हुआ एवं पीसा जीरा, पिसी हुई एक छोटी इलायची मिलाकर आधे घण्टे में पीयें। उल्टी बन्द हो जायेगी।

नींबू के छिलके सुखाकर, जलाकर राख बना लें, चौथाई चम्मच राख, राधा चम्मच शहद में मिलाकर चाटने से उल्टी बन्द हो जाती है।

दो छोटी इलायची पीसकर नींबू की फांक में भरकर चूसने से उल्टी बन्द हो जाती है।

सेंधा नमक और हरे धनिये पर आधा नींबू निचोड़कर चटनी बना लें। जब तक उल्टी हो, बार-बार आधा चम्मच चाटते रहें। यात्रा में उल्टी हो, तो नींबू चाटते रहें।

शिशु दूध पीने के बाद उल्टी करते हों तो दूध पिलाने से कुछ देर बाद तीन बूंद नींबू का रस एक चम्मच पानी मिलाकर पिलायें।

दस्त-एक कप ठण्डे पानी में चौथाई नींबू निचोड़ कर स्वाद के अनुसार नमक, चीनी मिलाकर दो-दो घण्टे में पीने से दस्त बन्द हो जाते हैं।

हैजा-नींबू हैजे से भी बचाता है। जब हैजा फैल रहा हो, किसी को हैजा हो गया हो तो सम्पर्क मे आने वाले लोग नींबू का अधिकाधिक सेवन करें। नींबू चूसें, नींबू का अचार खायें। भोजन के बाद नींबू का पानी पीयें। हैजा के कीटाणु खट्टी चीजों के सेवन से नष्ट हो जाते हैं। हैजा होने पर चार चम्मच गुलाब जल, थोड़ा-सा नींबू और मिश्री मिलाकर हर दो घण्टे में पिलाने से लाभ होगा।

(संवा भारती, अमरोहा के सौजन्य से)

आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि 'साप्ताहिक' सभी सम्मानित सदस्यों को प्रत्येक मास की 7, 14, 21, 28 तारीख को डाक द्वारा भेजा जाता है। एक सप्ताह तक पत्र न मिलने पर कृपया फोन नं० 01262-216222, 07206865945 पर सूचना दें। धन्यवाद। —व्यवस्थापक

वेदप्रचार मण्डल जिला जीन्द के.... पृष्ठ 3 का शेष....

तीनों पीढ़ियां, स्वाधीनता संग्राम में अग्रणी रहे, जेलें काटीं, यातनायें सहीं और नवयुवक भगत सिंह तो अपने क्रान्तिकारी कार्यों से ब्रिटिश सत्ता की जड़ें हिला गया तथा देश के लिये फांसी झूलकर आजादी प्राप्त करने का पथ प्रशस्त कर गया। सभा में सीनियर कक्षाओं के लगभग 125-150 छात्र/छात्रायें उपस्थित थे, पुरुष एवं महिला स्टाफ मैम्बर्स भी मौजूद थे।

जन्माष्टमी समारोह के लिये हमें सभी स्थानीय एवं आस-पास की आर्यसमाजों, सभाओं, संगठनों एवं आर्यजनों का भरपूर सहयोग मिला। सर्वश्री यज्ञवीर आर्य, नरेश आर्य, रमेशचन्द्र आर्य, ईश्वरार्य आदि कार्यकर्त्ताओं ने दिन-रात परिश्रम करके इस आयोजन को सफल बनाया। अन्य सभी का सहयोग प्रशंसनीय रहा। इनके अतिरिक्त-

श्री रतनलाल आर्य (अहीरका) सर्वश्री प्रवीण कुमार नवीन, हरदीप (जलालपुर कलां) अजित सिंह, बलराज, भगतसिंह, रोहतास (अकालगढ़), राजवीर, राजेन्द्र, राजेश (अमरहेड़ी) तथा इन गांवों के अन्य स्त्री-पुरुषों ने हमें पूरा सहयोग दिया।

वेदप्रचार मण्डल के महामंत्री एवं इस रपट के लेखक श्री कर्णदेव शास्त्री ने अपने आने जाने के लिए अपनी गाड़ी उपलब्ध करवाई, मण्डल उनका भी आभार मानता है।

हमारा प्रयास रहेगा कि आगे भी यह प्रचार कार्य चलता रहे ताकि लोगों तक वेद का ज्ञान उजाला पहुंचे और उन्हें अज्ञान, अविद्या, अन्धविश्वासादि के अन्धकार से मुक्ति मिले।

आत्मिक शांति के लिये शुद्धता से करें आव्हान
प्रसन्न हो आशीर्वाद देंगे भगवान
शुद्ध एम डी एच
हवन सामग्री

शुभ दिनों, शुभ कार्यों एवं पावन पर्वों में शुद्ध घी के साथ, शुद्ध जड़ी-बूटियों से निर्मित एम डी एच हवन सामग्री का प्रयोग कीजिये। शुद्धता में ही पवित्रता है। जहां पवित्रता है वहां भगवान का वास है, जो एम डी एच हवन सामग्री के प्रयोग से सहज ही उपलब्ध है।

अलौकिक सुगंधित अगरबत्तियां
एम डी एच रूह अगरबत्ती
एम डी एच मुस्कान अगरबत्ती
एम डी एच चन्दन अगरबत्ती
एम डी एच पराग अगरबत्ती
एम डी एच नवयुग अगरबत्ती
महाशियां दी हट्टी लि०
एम डी एच हाउस, 9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली-15 फोन : 5937987, 5937341, 5939609
ब्रांचेज : • दिल्ली • गाजियाबाद • गुड़गांव • कानपुर • कलकत्ता • नागौर • अमृतसर

मै० कुलवन्त पिक्कल स्टोर, शाप नं० 115, मार्किट नं० 1, एन.आई.टी., फरीदाबाद-121001 (हरि०)
मै० मेवाराम हंसराज, किराना मर्चेन्ट, रेलवे रोड, रिवाड़ी-123401 (हरि०)
मै० मोहनसिंह अवतारसिंह, पुरानी मण्डी, करनाल-132001 (हरि०)
मै० ओमप्रकाश सुरिन्द्र कुमार, गुड़ मण्डी, पानीपत-132103 (हरि०)
मै० परमानन्द साईं दित्तामल, रेलवे रोड, रोहतक-124001 (हरि०)
मै० राजाराम रिक्खीराम, पुरानी अनाज मण्डी, कैथल-132027 (हरि०)

लाला रामेश्वरदयाल शर्मा (निडर) नहीं रहे

आर्यसमाज रेवाड़ी के पुराने एवं कट्टर आर्यनेता लाला रामेश्वरदयाल जी दिनांक 14.9.2015 को इस संसार से विदा हो गये। उनके परिवार के सदस्यों ने बड़ी श्रद्धा से उनका अन्तिम संस्कार स्वामी जीवानन्द जी नैष्ठिक द्वारा वैदिक रीति से करवाया। दिनांक 18.9.2015 को उनका शान्तियज्ञ किया गया जिसमें भारी संख्या में लोग उपस्थित हुए तथा लालाजी के परिवार ने अनेक आर्य संस्थाओं एवं गोशालाओं को अपनी नेक कमाई में से दान दिया। लाला रामेश्वर दयाल जी महाशय हीरालाल जी के परमभक्त एवं शिष्य रहे थे। महाशय जी के साथ मिलकर उन्होंने गांवों में जा-जाकर प्रचार किया था तथा अनेक अवसरों पर मेलों-ठेलों में गुण्डागर्दी रोकने हेतु लाठियां तक बजाई थीं। सच्ची बात कहने में उन्हें डर नहीं लगता था तथा इसी कारण उन्हें निडर कहा जाने लगा था। आर्यसमाज के सिद्धान्तों के विपरीत उन्होंने कभी समझौता नहीं किया। सदैव ऋषि दयानन्द के विचारों के समर्थक रहे। 83 वर्ष की वय होने, रुग्णता से शरीर कमजोर होने के कारण घर से बाहर नहीं निकल पाते थे परन्तु मनोबल अन्त समय तक बना रहा। वे बार-बार महाशय सुखराम जी आर्य, मनोहरलाल जी तथा मुझे (देशराज आर्य) को बुलाकर आर्यसमाज में अधिक से अधिक कार्य करने के लिए कहते थे। उन्हें टीस रहती थी कि कुछ समाजें अच्छा कार्य कर रही हैं परन्तु हमारी रिवाड़ी की आर्यसमाज शिथिल पड़ गई है। कहते थे कि भई मैं शरीर से लाचार हो गया हूँ तुम ही कुछ न कुछ नया करते रहो। मरते समय तक भी उनकी भावना रही कि रेवाड़ी शहर की तीनों आर्यसमाजें मिलकर एक दूसरे को साथ लेकर आर्यसमाज का प्रचार-प्रसार करें। रेवाड़ी जिले की आर्यसमाज पुरानी एवं ऐतिहासिक है, इसे अधिक से अधिक ऋषि दयानन्द का कार्य करना चाहिए तथा इसी भावना के साथ वे संसार से विदा हो गये। आर्यसमाज के पुराने कट्टर मंजे हुए सदस्य पुराने वटवृक्षों की भांति गिरते जा रहे हैं। नई पीढ़ी में ऐसे आर्यसमाजी बन पायेंगे या नहीं भविष्य में ही पता चलेगा। लाला जी आर्यसमाज के लिए सदैव प्रेरणा के स्रोत बने रहे। आर्यसमाज के सदस्य उनके प्रशस्त किये मार्ग पर चलते रहेंगे तो यही उनके लिए सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

आर्यसमाज (नई सब्जी मण्डी) रेवाड़ी का चुनाव

दिनांक 6.9.2015 को आर्यसमाज (नई सब्जी मण्डी) रेवाड़ी का वार्षिक चुनाव सायं 5 बजे आर्यसमाज मन्दिर में पूज्य आचार्य श्री विजयपाल जी की अध्यक्षता में बड़े सौहार्दपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुए।

सर्वसम्मति से रावश्री कुलदीप सिंह यादव को प्रधान चुना गया। आचार्य जी के दिशा निर्देश पर 13.9.2015 को राव कुलदीप सिंह जी ने नियमानुसार अपनी कार्यकारिणी का गठन किया। श्री सुखराम आर्य, श्री ईश्वरसिंह यादव को संरक्षक, श्री गजानन्द आर्य को कार्यकारी प्रधान, श्री वेदप्रकाश शास्त्री, श्री महावीर प्रसाद शर्मा, श्री अमरसिंह सैनी व श्री कमल सैनी को उपप्रधान, श्री गोविन्द शर्मा को मन्त्री श्री लोकेश शर्मा को उपमन्त्री, श्री देशराज आर्य को मुख्य परामर्शदाता एवं प्रवक्ता, श्री प्रभुदयाल सैनी को कोषाध्यक्ष, श्री लक्ष्मीनारायण को सह-कोषाध्यक्ष, श्री मूलचन्द्र आर्य को प्रचारमंत्री, श्री ईश्वरसिंह सांगवान को लेखा-निरीक्षक, श्रीमती कमला आर्या, श्री हरिओम् शास्त्री, श्री आशाराम शर्मा, श्री दौलतराम शर्मा एवं श्री महेन्द्र सिंह खण्डेलवाल को अन्तरंग सदस्य नियुक्त किया गया।

—देशराज आर्य, मुख्य परामर्शदाता एवं प्रवक्ता, आर्यसमाज, रेवाड़ी

त्रैवार्षिक चुनाव सम्पन्न

आर्य शिक्षा समिति दुर्ग-भिलाई का त्रैवार्षिक चुनाव, चुनाव अधिकारी वरिष्ठ आर्यसमाजी श्री मोहनलाल चड्ढा जी के द्वारा सम्पन्न कराया गया जिसमें निम्न पदाधिकारियों का चयन सर्वसम्मति से हुआ।

संरक्षक-श्री गुलाबचन्द वानप्रस्थी, श्री मोहनलाल चड्ढा, अध्यक्ष-श्री हरीश बंसल, उपाध्यक्ष-श्री विनीत श्रीवास्तव, सचिव-श्री संतोष शर्मा, कोषाध्यक्ष-श्री विनोद विहारी सक्सेना।

—अध्यक्ष, आर्य शिक्षा समिति दुर्ग-भिलाई

जातीय द्वेष खत्म करने के लिए पोस्टकार्ड बांट दिलायेंगे संकल्प

पानीपत। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा आपसी भाईचारा बढ़ाने के लिए संकल्प-पत्र भरवाएगी। इसके लिए जिले में प्रचारक टीम द्वारा अभियान चलाकर पोस्टकार्ड रूपी संकल्प-पत्र बांटे जायेंगे। संकल्प पत्र भरकर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के पास भेजे जाने हैं। आचार्य बाल भारती पब्लिक स्कूल के प्रबन्ध निदेशक अभय सिंह आर्य, आर्यसमाज के पुरोहित राजकुमार शास्त्री, डॉपीई जगदीश आर्य ने पत्रकारों से बातचीत में यह जानकारी दी।

उन्होंने कहा कि देश-प्रदेश में जातिवाद की बुराई शुरू हो गई है। जातिवाद की समस्या से छुटकारा दिलाने का उपाय सैकड़ों वर्ष पहले स्वामी दयानन्द ने हमें सुझाया था। उन्होंने कहा कि अपने देश का प्राचीन नाम आर्यावर्त था। यहाँ के सभी निवासी आर्य थे। आर्य का अर्थ श्रेष्ठ, धार्मिक, परोपकारी तथा सदा से ही इस देश में बसने वाले हैं। ऐसे में जातीय द्वेष को दूर करने के लिए लोग अपने नाम के पीछे जातीय पुष्टि करने वाला शब्द न लगाएं। लगाना ही है तो नाम के पीछे आर्य लगाएं। इसको लेकर जागरूकता अभियान चलाया जाएगा। पोस्टकार्ड बांट संकल्प पत्र भरवाए जायेंगे।

वार्षिक चुनाव सम्पन्न

आर्यसमाज, मठपारा दुर्ग (छत्तीसगढ़) का वार्षिक अधिवेशन (चुनाव) स्वामी श्रद्धानन्द सभागार में सम्पन्न हुआ जिसमें वरिष्ठ आर्यसमाजी श्री मोहनलाल चड्ढा (चुनाव अधिकारी) की उपस्थिति में सर्वसम्मति से निम्न पदाधिकारियों का चयन किया गया—

संरक्षक-श्री गुलाबचन्द वानप्रस्थी, श्री मोहनलाल चड्ढा, प्रधान-श्री विनोद बिहारी सक्सेना, उपप्रधान-श्री हरीश बंसल, श्री के.एल. चौधरी, मंत्री-श्री विनीत श्रीवास्तव, उपमंत्री-श्री संतोष शर्मा, श्रीमती अनीता तलवार, प्रचारमंत्री-श्री उमेश शर्मा, अधिष्ठाता-श्री लोकनाथ शास्त्री, कोषाध्यक्ष-श्री सुजीत खरे, पुस्तकाध्यक्ष-सुश्री रेखा सांलुके।

-प्रधान, आर्यसमाज, मठपारा दुर्ग (छत्तीसगढ़)

हमारा अभिवादन नमस्ते ही.... पृष्ठ 2 का शेष.....

10. ऋषि व्यास ने देवदूत को नमस्ते की—**देवदूत नमस्तेऽस्तु गच्छ तात यथासुखम्**-(महा०, वन०अ० 260/38)
11. अर्जुन ने कृष्ण को नमस्ते की—**पुनश्च भूयोऽपि नमो नमस्ते।** (महा०, भीष्म०अ० 35/39)
12. भीष्म ने कृष्ण को नमस्ते की—**नमोऽस्तु ते शार्ङ्ग गदासिपाणे।** (महा०, भीष्म०अ० 59/96)
13. कृष्ण ने धृतराष्ट्र को नमस्ते की—**शिवेन पाण्डवान् ध्याहि नमस्ते भरतर्षभ।** (महा०, शा०अ० 63/51)
14. ब्रह्मा ने अपने पुत्र को नमस्ते की—**नमस्ते भगवन् रुद्र भास्करामिततेजसे।** (शिव० वायु० ख०अ० 24/45)

नमस्ते के उत्तर में नमस्ते ही कहना चाहिए

15. सावित्री ने ब्रह्मा से नमस्ते की—**भावस्तिष्ठ देव नमोऽस्तु ते।** (पद्म, सृ०, अ० 17/40)
16. इसके उत्तर में ब्रह्मा ने भी सावित्री को नमस्ते की—**क्षम देवि नमोऽस्तु ते।** (पद्म, सृ०, अ० 17/144)
17. **नमस्ते अजाते नमस्ते अपाते।** (श्री गुरुग्रन्थ साहिब)
18. **जब-जब मिलें, परस्पर 'नमस्ते जी' कहें**—महर्षि दयानन्द सरस्वती

वास्तव में 'नमस्ते' ही सार्वभौतिक, सार्वकालिक और सार्वदेशिक अभिवादन है।

उपर्युक्त विस्तृत चर्चा के पश्चात् सभी सज्जनों से अनुरोध है कि समस्त विश्व के मानवों को एकसूत्र में पिरोने व कल्याण, मैत्री एवं एकता के लिए तथा परस्पर अभिवादन के लिए 'नमस्ते' शब्द का ही प्रयोग करें।

संपर्क-डीएनवाई व मॉस्टर कॉस्मिक एनर्जी हीलर, चरित्र निर्माण मंडल, सैनी मौहल्ला, ग्राम-शाहबाद, मोहम्मदपुर, नई दिल्ली-61 मो० 9871644195

ग्राम गुरेरा (भिवानी) में पुण्यतिथि पर वेदप्रचार का आयोजन किया गया

भिवानी। स्व० सेठ फूलचन्द आर्य की पुण्यतिथि पर प्रतिवर्ष की भांति 25.09.2015 को 10+2 विद्यालय में यज्ञ व वेदप्रचार का सफल आयोजन किया गया। आचार्य डॉ. प्रमोद योगार्थी ने यज्ञ करवाया। श्री सीताराम बेरवाल ने यजमान का स्थान ग्रहण किया। मंच का संचालन श्री सूर्यदेव वेदांशु ने किया।

वानप्रस्थ अत्तर सिंह स्नेही ने इतिहास के उदाहरण देकर शराब से होने वाले नुकसान का दर्दनाक चित्र खींचा तथा लोगों से अपील की कि शराब से करलो किनारा वरना जीवन है अंधियारा। वैदिक विद्वान् डॉ. प्रमोद ने वेदमन्त्र के माध्यम से कर्मफल व्यवस्था व परोपकार पर सारगर्भित विचार रखे। डॉ. रविदत्त शास्त्री का आध्यात्मिक प्रवचन हुआ। श्री सहदेव बेधड़क व हवासिंह तूफान के तीन दिन गांव में तथा विद्यालय में प्रेरणा दायक भजन हुए।

इस अवसर पर श्री सेठ जगदीश प्रसाद आर्य, सेठ रामरिछपाल आर्य, पं० रामजी लाल आर्य पूर्व सांसद, निर्मला देवी, रुकमा देवी सरपंच महोदया 20 महिलाओं के साथ मंच पर उपस्थित थीं। श्री जगदीश आर्य ने स्व. फूलचन्द की याद में गांव गुरेरा में तीन विद्यालय, गोशाला, अस्पताल, धर्मशाला गांव में बनाये हैं। समय-समय पर वेदप्रचार, यज्ञ व गांव की भलाई के लिए कार्य किये हैं। सारा गांव इस परिवार का सम्मान करता है। स्कूली बच्चों के रोचक भजन हुए। परीक्षा में अच्छे नम्बर लेने वाले छात्रों को सेठ जगदीश प्रसाद आर्य ने वैदिक साहित्य देकर सम्मानित किया।

—मा० श्री रामनिवास आर्य ग्राम गुरेला, जिला भिवानी

साप्ताहिक सत्संग हर्षोल्लास सम्पन्न

आर्यसमाज दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार का साप्ताहिक सत्संग हर्षोल्लास के साथ 27.09.2015 को महात्मा आनन्द स्वामी के सभागार में सम्पन्न हुआ। प्रात: हवन किया गया। आचार्य डॉ. प्रमोद योगार्थी के ब्रह्मत्व में यज्ञ हुआ, विद्यालय के छात्रों ने मंत्र पाठ किया।

शेष कार्य मंच से चला, मंत्री प्रमोद लाम्बा ने मंच का संचालन किया। ब्र० अमित आर्य ने प्रेरणा दायक भजनों का कार्यक्रम पेश किया। महाशय चिरंजीव आर्य ने ईश्वर भक्ति का भजन गाया। आर.एस. चुघ ने महर्षि दयानन्द जी पर प्रेरणा दायक भजन रखा। वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही ने शराबबन्दी पर सारगर्भित विचार रखे। लोगों से शराब से दूर रहने की अपील की।

मुख्य वक्ता आचार्य डॉ. प्रमोद योगार्थी ने वेदमन्त्र की सरल शब्दों में व्याख्या की तथा चरित्र निर्माण पर भी प्रकाश डाला। इस अवसर पर प्रमुख महानुभाव उपस्थित थे। वेदप्रचार मण्डल के प्रधान रामकुमार आर्य, सेठ सत्यप्रकाश मित्तल, चौ० निहाल सिंह पूर्व इंसपेक्टर, विनय कुमार आर्य, अवनीश आर्य, अजय एलनाबादी एडवोकेट, मदान परिवार, राजेश आर्य, प्रेम गाबा आदि उपस्थित थे।

—कैलाशचन्द्र शास्त्री, दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय, हिसार

विज्ञापन के माध्यम से दी जाने वाली सहयोग राशि

अन्दर के पृष्ठों के विज्ञापन रेट

एक पृष्ठ 5000/-, आधा पृष्ठ 2500/-, चौथाई पृष्ठ 1000/-, 1/8 पृष्ठ 500/- एवं 1/8 पृष्ठ से कम स्थान पर न्यूनतम एक बार का शुल्क 250/- रु०।

नोट—11 माह की सहयोग राशि प्राप्त होने पर धन्यवाद स्वरूप 12 माह के 48 अंकों में विज्ञापन प्रकाशित किया जाएगा। **'आर्य प्रतिनिधि'** साप्ताहिक प्रत्येक मास की 7,14,21, 28 तारीखों में प्रकाशित किया जाता है।

व्यवस्थापक, 'आर्य प्रतिनिधि' साप्ताहिक,
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक

सरल आध्यात्मिक शिविर

दिनांक : 13 नवम्बर से 17 नवम्बर 2015 तक

स्थान : गुरुकुल भैयापुर लाढौत, रोहतक

शिविर आयोजक : वैदिक ज्ञान प्रसार न्यास (पंजी.) रोहतक

शिविराध्यक्ष : स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक, निदेशक दर्शन योग महाविद्यालय, रोजड़ (गुजरात)

अन्य विद्वान् : स्वामी आशुतोष जी परिव्राजक, आचार्य कर्मवीर जी योग शिक्षक, ऋषि उद्यान, पुष्कर रोड, अजमेर (राज०) व कमलेश राणा जी, महिला योग शिक्षिका, रोहतक।

प्रवेश शुल्क: 1000/- रुपये

आवेदन करने की अन्तिम तिथि 5 नवम्बर 2015

शिविर प्रवेश पात्रता

1. स्वस्थ व्यसनरहित अनुशासन में चलने वाले को प्रवेश दिया जाएगा।
2. आयुसीमा—न्यूनतम 15 वर्ष।
3. शिक्षा—न्यूनतम 10वीं कक्षा पास।

विशेष-उच्च शिक्षा प्राप्त युवक/युवतियों को शिविर में भाग लेने के लिए प्राथमिकता दी जाएगी। ब्रह्मचारियों के लिए प्रवेश निःशुल्क होगा। अन्य छात्र एवं छात्राओं के लिए शुल्क 500/- रुपये देय होगा। शिविर में प्रवेश के लिए पंजीकरण अनिवार्य है।

आवेदन/पंजीकरण करने हेतु सम्पर्क सूत्र—

श्री हवासिंह राठी - मोबा० 09466008120
श्री कर्णसिंह मोर - मोबा० 09728884949
श्री सुगमा मुनि (पूर्व नाम श्रीमती अंगूरी देवी आर्या) - मोबा० 09812792770
निवेदक : निगम मुनि, मोबा० 9355674547

उद्घाटन समारोह निमन्त्रण

दर्शन योग महाविद्यालय, रोजड़ की सुन्दरपुर शाखा का उद्घाटन समारोह 1 नवम्बर 2015 को प्रात: 8 से 10 बजे माननीय पूज्य आचार्य बलदेव जी प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली द्वारा महात्मा प्रभु आश्रित कुटिया सुन्दरपुर रोहतक में होगा। इस कार्यक्रम में स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक, निदेशक, स्वामी ब्रह्मविदानन्द जी सरस्वती प्रधानाचार्य, स्वामी आशुतोष जी परिव्राजक आदि विद्वान् उपस्थित होंगे। इस कार्यक्रम में आप सादर आमन्त्रित हैं।

निवेदक : **वानप्रस्थ निगम मुनि** (पूर्व नाम रणवीरसिंह बल्हारा) प्रबन्धक, दर्शन योग महाविद्यालय महात्मा प्रभु आश्रित कुटिया, सुन्दरपुर, रोहतक

वार्षिक उत्सव का आयोजन

आर्यसमाज पालिका कॉलोनी भिवानी रोड रोहतक का भव्य छठा वार्षिक उत्सव उत्साह पूर्वक मनाया जा रहा है। इस महासम्मेलन में अनेक विख्यात संत, राजनेता, आर्यनेता, संन्यासी, विद्वान्, भजनोपदेशकों को आमन्त्रित किया जा रहा है।

कार्यक्रम-शुक्रवार, शनिवार, रविवार, दिनांक 23-24-25 अक्तूबर 2015। सामवेद ब्रह्मपारायण यज्ञ-प्रात: 7 बजे से 9.30 बजे तक एवं सायं 3 बजे से 5.30 बजे तक। यज्ञब्रह्मा-आर्यजगत के प्रसिद्ध विद्वान् आचार्य वेदमित्र जी (वैदिक प्रवक्ता, रोहतक)। वेदपाठ-गुरुकुल गौतम नगर के ब्रह्मचारियों द्वारा किया जाएगा। संयोजक-आचार्य शम्भूमित्र शास्त्री (गुरुकुल सिंहपुरा, रोहतक) एवं महावीर शास्त्री।

दिनांक 24 अक्तूबर 2015 को माननीय सुभाष बत्रा (पूर्व गृहमंत्री, हरियाणा सरकार) प्रात: 9.30 बजे। भजनोपदेश-बहन दया आर्या, श्री पवन जीत एवं मनीष जी एवं उपदेश-आचार्य मैत्रेय जी।

अत: आप इस समारोह में इष्ट-मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक **मा० रामपाल आर्य** ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स, माता मन्दिर चौक, पाड़ा मोहल्ला, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।